Rs. 10/-

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 10, October 2014

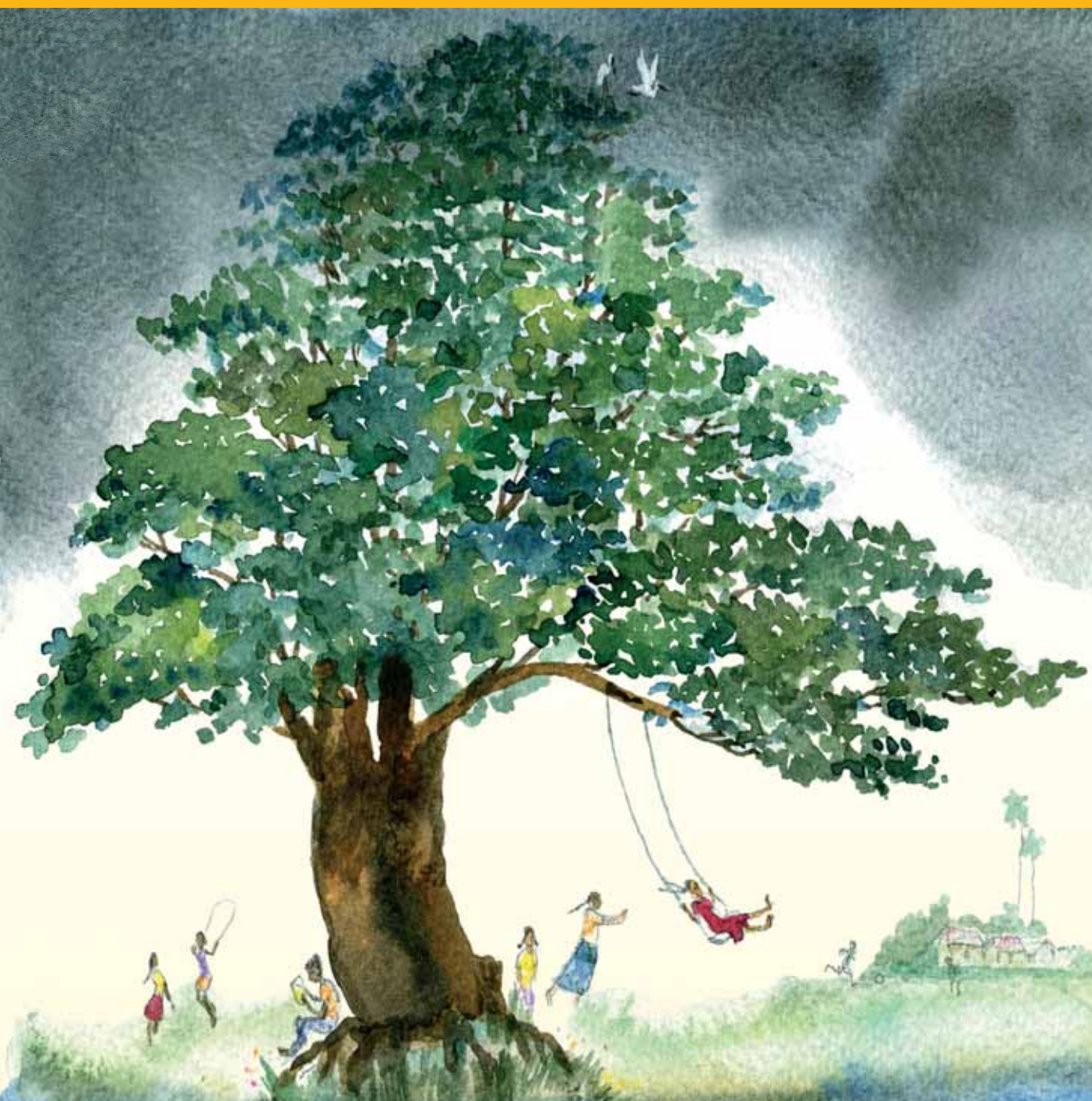

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 10, October 2014 **वर्ष 19, अंक 10, अक्टूबर 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Atanu Roy
अतनु रॉय

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Sheds, Ph-I, Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

Children's Literature...		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
The Perfect Artist	Jawahar Lal Nehru	6
किताबों का घर	भगवती प्रसाद द्विवेदी	9
मूँगफली वाला घोंसला	लक्ष्मी खन्ना सुमन	10
रेलगाड़ी	एस.के. सक्सैना	13
The Kanvarias	Aditi Sarkar	14
दरजी और हाथी	प्रेम वर्षा सेठी	16
गाँधी जी और पटेल...	शोभा माथुर बिजेन्द्र	17
Mango Grove and...	Gayatri Mishra	19
घर-घर आई दीवाली	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	21
दोस्ती में शक नहीं	राजकुमार जैन 'राजन'	22
खिलौनेवाला	उमेश कुमार चौरसिया	24
चौथा पक्षी	रेनू चौहान	25
Music	Akanksha Patel	28
हिमालयन मोनल	सतीश कुमार अल्लीपुरी	29
Rain	Vidyarenu Swamy	31
आप कितने बुद्धिमान हैं?	कृष्ण परवेज	32

***Editorial Address*/संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

Children's Literature Promotional Events

National Centre for Children's Literature (NCCL) of National Book Trust, India organized an interactive talk on the topic *Children's Literature: Writing and Publishing in Australia* at NBT Conference Room, New Delhi on 24 September 2014. Mr Christopher Cheng, noted Australian children's author and Co-chair of the International Advisory Board for the Society of Children's Book Writers and Illustrators (SCBWI), was the key speaker on the occasion.

On this occasion, the Hindi and Tamil translations of the book *Water*, authored by Mr Cheng were released. It was followed by reading of the book in English, Hindi and Tamil by Mr Cheng, Dr Madhu Pant, noted author and Dr M A Sikandar, Director, NBT.

Mr Cheng highlighted about the publishing scenario of children's books in Australia. He said that picture books, graphic novels and digital books are very popular in Australia and as such, big and small Australian publishers develop a lot of indigenous books. He observed that gender specific books especially books for boys and girls are also very popular in Australia. He advised parents to read stories to their children and share experience of reading.

NCCL in association with Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan, Nivesh (NGO), Himalayan Hub for Art, Culture and Heritage (HHACH) and Jaswant Modern School, Dehradun partnered with the Ghummakkad Narain Travelling Children's Literature Festival for various reading promotional events at Shillong and Dehradun in August and September 2014. During the festival, several storytelling sessions, workshops and interactive sessions were organized. The storytelling sessions and workshops were conducted by Mr Christopher Cheng, eminent Australian children's author, Shri Prempal Sharma, Shri Manas Ranjan Mahapatra and Ms Bina Kapoor, eminent Indian children's author and Ms Viky Arya, well-known illustrator.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 19

सात समुंदर

ट्रेनिंग फिर शुरू

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री के घर लौटने पर दादी उसे छाती से लगा लेती है। गायत्री का दैनिक जीवन शुरू हो गया, वह स्कूल गई। शाम को कुमारन गायत्री के घर आ पहुँचे। दद्दा नारायणन इस बात से सख्त नाराज हैं कि गायत्री का बाप मणिशंकरन भी उसके तैराकी सीखने के खिलाफ है। कुमारन नारायणन से अनेक तर्क देकर गायत्री की तैराकी फिर से शुरू करवाने का दबाव बनाते हैं। अब आगे नया घट्नाक्रम...

"यह दुनिया हसीन है। हम सब एक खुशहाल धरती में जीना चाहते हैं। ...सहमी हुई जिंदगी भी कोई जिंदगी है?"

कपिलदेव

तारे छुपने लगे थे। चाँद की हँसी बुझ-सी गई थी। रात अपना काला आँचल धीरे-धीरे खींच रही थी। उसे वापस अपने डेरे में जाना है। दिवाकर ने अपनी तूलिका से आकाश के कैनवास को रँगना शुरू किया—लाल... लाल...

डाल-डाल मुखर हो रही थी चिड़ियों के चहकने से।

दूसरे दिन भोर में नारायणन अभ्यासवश उठ गए थे। परंतु मन-ही-मन उदास थे कि आज गायत्री को ले नहीं जाना है। कोई काम नहीं, कोई जल्दी नहीं।

धीरे-धीरे मुँह-हाथ धोकर अनमने भाव से आँगन में खड़े थे। फिर ताँबे के अर्धपात्र में पानी लेकर उगते सूर्य को अर्ध्य देने लगे—

"जपा कुसम शंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वन्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।"

(गुड़हल के फूल के समान लाल, हे सूर्य, तुम महाप्रकाशवान हो। हमारे पापों का नाश करो। हे दिवाकर, तुम्हें प्रणाम!)

वे मशीन की तरह हर काम किए जा रहे थे। कुछ अच्छा नहीं लग रहा था।

तभी पीछे से आकर किसी ने उनके गले में हाथ डालकर कान में फुसफुसाकर कहा, "आई एम सॉरी दद्दा! आज नहीं चलोगे?"

शशिशेखर नारायणन ने मुड़कर देखा तो सामने गायत्री खड़ी थी। उन्होंने उसे सीने से लगा लिया, "आई एम सॉरी टू, चल जल्दी-जल्दी तैयार हो जा!"

फिर देखते-ही-देखते बासठ साल के नारायणन और तेरह साल की गायत्री—दो दोस्त फिल्मी अंदाज में घर से रफूचक्कर हो गए।

उन्हें देखते ही कुमारन भी गद्‌गद हो गए। हनुमान जी की तरह दोनों हाथों को सिर पर छुआकर उसने प्रणाम किया, ''हे पद्‌मनाभस्वामी! किरपा बनी रहे प्रभु!''

उनकी हरकत देखकर दोनों अपनी हँसी रोक न सके।

''चल-चल, अब देर नहीं!'' कुमारन भी ट्रैक सूट में हाजिर हो गए,''रेडी, वन-टू-थ्री...''

ट्रेनिंग आरंभ हो गई...

गायत्री की एकलव्य-साधना के साथ-साथ नारायणन के उत्साह में भी सात सागरों का ज्वार आ गया। रोज सुबह पोती को उठाना, अपने हाथों से उसे कॉफी मिलाकर दूध पिलाना, फिर साइकिल पर बिठाकर फेरीघाट ले जाना। स्टीमर पर सवार होकर पंपा के पार अलेप्पी जाना, फिर साइकिल पर स्टेडियम तक का सफर। उसी तरह, घर वापस आकर नारियल का तेल गरम करके गायत्री के हाथ-पैर की मालिश करना। उनकी स्फूर्ति इंद्र के घोड़ा, उच्चैश्रवा जैसे हरदम उमंग से भरपूर थी।

कभी-कभी गायत्री ना-नुकुर करती, ''दद्‌दा, सुबह-सुबह दूध पीना अच्छा लगता है क्या?''

''अरे पी ले, दूध कहाँ? कॉफी ही तो है!''

फिर गायत्री के लिए काजू लाना, मेवे लाना, यह तो रोज की बात बन गई।

कभी-कभी मणि भी अपनी अम्मा से शिकायत करता, ''मैं भी कभी छोटा था, तुमलोगों का इकलौता था। अच्चा मेरे लिए तो कभी मेवे नहीं लाए!''

दादी उसे डाँटती, ''चल हट, अपनी ही बेटी से ईर्ष्या करता है?''

अनंती भी हँसने लगती, ''मेरी बेटी के सौभाग्य से जलते हो?''

गायत्री भी पिता से मजाक करने लगती, ''अच्छा बाबा, मुझसे ही ले लो, यह लो खाओ। तुम भी क्या याद करोगे।''

एक दिन वे हरिपदम के फेरीघाट पर वापस उतरे तो वहाँ कुंजपातुम्मा अपनी मछली की टोकरी लेकर बैठी थी। थोड़ी दूर हासनकुट्टी भी बैठा था, उदास—पंपा की लहरों में अपनी तकदीर का उतार-चढ़ाव पढ़ता हुआ। बेचारे की बिजली की सेंकाई फिर से चल रही है, परंतु हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ।

हालचाल पूछने पर कुंजपातुम्मा बोली, ''अगले महीने तिरुवनंतपुरम के हबीबशाह की दरगाह में उर्स का मेला लगेगा। सोच रही हूँ वहीं जाकर चादर चढ़ा आऊँ। हबीब तो हर बंदे के दोस्त थे। देखें, हम पर रहमत करते हैं कि नहीं!''

केरल में तो सभी धर्मों का मानो संगम है। करीब बावन ईसवी में स्वयं यीशु के शिष्य संत थॉमस के आगमन से यहाँ ईसाई धर्म का प्रसार आरंभ हुआ। इसके करीब पाँच सौ साल बाद इस्लाम की नींव रखी गई मालाबार में। हिंदुस्तान की पहली मस्जिद भी यहीं क्रांगानोर में बनी थी। जमोरिन राजाओं ने इसके लिए काफी मदद की थी। यहूदी भी फिलिस्तीन से सन् 1684 में सबसे पहले यहीं अनजेनगो में आकर बसे थे। रानी आत्तिंगल ने उन्हें रहने के लिए भूदान किया था और 20 मई, 1498 ई. को वास्कोडिगामा ने भी सबसे पहले कालिकट में ही कदम रखा था।

तिरुवनंतपुरम में तीन प्रसिद्ध मस्जिदें हैं। हवाई अड्डे के पास बीमापालि मस्जिद, पलयम में जामा मस्जिद और थंपानूर की मस्जिद। यहीं हबीबशाह की दरगाह में हर साल उर्स का मेला लगता है। हिंदू एवं मुस्लिम दोनों समुदाय के लोग यहाँ मन्नतें माँगने आते हैं। मकबरे पर चादर चढ़ाते हैं। वहीं आँगन के नीम की डाल पर धागा बाँधते हैं और मन्नत पूरी होने पर उसे खोलने के लिए फिर यहाँ माथा टेककर जाते हैं।

नारायणन ने हासनकुट्टी के सिर पर हाथ रखा। उन्होंने सोचा, इसकी कितनी उमर होगी? मुझसे शायद छोटा ही है, परंतु देखो गरीबी की मार। मुझसे दस साल बड़ा लगता है—फटे हुए चमड़े, चेहरे पर गहरी होती झुर्रियाँ। हाय रे अभागा! यही है रत्नाकर की संतान, तिस पर यह बीमारी। उन्होंने कहा, ''हम भी तो तिरुवनंतपुरम चलेंगे। चलना एक साथ, अलेप्पी से ट्रेन लेंगे।''

''सच, आप चलिएगा?'' कुंजपातुम्मा को जैसे कुछ हिम्मत हुई।

अस्फुट स्वर में हासनकुट्टी ने भी आदाब की।

सोते-जागते एक ही ध्यान रहने से जो होता है, उस रात को वही हुआ। नारायणन अपने पलंग पर लेटे हुए थे, गायत्री अपने बिस्तर पर सो रही थी। अचानक वे चिल्ला उठे, ''मणि! कुमारन! उसे सँभालो! वह डूब...''

शायद वह सपना देख रहे थे कि गायत्री समुंदर में तैर रही है। वे उसे बचा नहीं पा रहे हैं। उनके चिल्लाने से गायत्री हड़बड़ाकर उठ बैठी, ''क्या हुआ अप्पुपन?''

''कुछ नहीं, तू सो जा।'' वे झेंप गए।

परंतु अब कहाँ नींद आती है? गायत्री को डर लग रहा था। वह उठी और चुपके से दादी के बिस्तर में घुस गई।

''क्या हुआ रे?'' दादी ने उसे अपनी ओर खींच लिया। ''इतनी रात गए मेरे पास सोने आ गई!''

''अरे, अप्पुपन अचानक चिल्लाने लगे। पता नहीं क्या सपना देख रहे थे! कौन डूब रहा था।''

दादी हँसने लगी, ''अरे, यह उनकी पुरानी आदत है। तब मेरी नई-नई शादी हुई थी, तो अचानक रात को सोते-सोते ये चिल्लाने लगे—'चोर! चोर! पकड़ो! पकड़ो!' मैं तो बाबा डर गई। मैं ठहरी नई दुलहिन। मेरे तन पर भारी-भारी गहने थे। चौंककर बैठ गई, कहाँ है चोर? हाय कृष्णा! तब तेरे दादा कहने लगे—'कुछ नहीं। सो जाओ, सो जाओ!' हुँह। फिर कहीं नींद लगती है? मैं तो मारे डर के उठकर भागी। लेकिन जाती कहाँ? जैसे-तैसे दौड़कर आँगन पारकर तेरे अप्पुपन की अम्माँ के पास रातभर लेटी रही। दूसरे दिन मुहल्ले की सारी औरतें हँस रही थीं—क्यों, तुम्हारे घर चोर आया था? सब इन्हें चिढ़ाने लगीं—देखना, तुम्हारी घरवाली को ही न उठा ले जाए!''

सी-26/36-40ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001
(उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

The Perfect Artist

Jawahar Lal Nehru

Mahatma Gandhi and Shri Jawaharlal Nehru shared a close relationship. Even though they had many ideological differences, they had great affections for each other. On the occasion of the 145th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi on 2 October, 2014, we are producing an article published in the newspaper Harijan on 15 February 1948. It was written by Shri Jawaharlal Nehru. In this article he paid tribute to Mahatma Gandhi after his death on 30 January 1948. This article has been taken from the NBT book titled Gandhi-Nehru Correspondence: A Selection edited by Shri Arjun Dev.

Nineteen-sixteen. Over thirty-two years ago. That was when I first saw Bapu, and an age has gone by since then. Inevitably one looks back and memories crow in. What a strange period this has been in India's history and the story, with all ups and downs and triumps and defeats, has the quality of a ballad and a romance.

Even our trivial lives were touched by a halo or romance, because we lived through this period and were actors, in greater or lesser degree, in the great drama of India.

This period has been full of wars and upheavals and stirring events all over the world. Yet events in India stand out in a distinctive outline because they were on an entirely different plane. If the person studied this period without knowing Bapu he would wonder how and why all this happened in India. It is difficult to explain it; it is even difficult to understand by the cold light of reason why each one of us behaved as he or she did. It sometimes happens that an individual or even a nation is swept away by some gust of emotion or feeling into a particular type of action. Sometimes noble action, more often ignoble action. But that passion and feeling pass and the

individual soon returns to his normal levels of action and inaction.

The surprising thing about India during this period was not only that the country as a whole functioned on a high plane, but also that it functioned more or less continuously for a lengthy period on that plane. That indeed was a remarkable achievement. It cannot easily be explained or understood unless one looks upon the astonishing personality that moulded this period. Like a colossus he stands astride half a century of India's history, a colossus not of the body but of the mind and spirit.

We mourn for Bapu and feel orphaned. Looking back at his magnificent life,what is there to mourn for? Surely to very, very few human beings in history could it have been given to find so much fulfillment in their own lives. He was sad for our failures and unhappy at not having raised India to greater heights. That sadness and unhappiness are seasy to understand. Yet who dare say that his life was a failure? Whatever he touched he turned into something worthwhile and precious. Whatever he did yielded substantial results, though perhaps not as great as he hoped for. One carried way the impression that he could not really fail in anything that he attempted. Accordingly to the teachings of the *Gita*, he laboured dispassionately without caring too much for results, and so results came to him.

During his long life, full of hard work and activity and novel adventures out of the common rut, there is hardly

any jarring note anywhere. All his manifold activities became progressively a symphony and every word he spoke and every gesture that he made fitted into this and so unconsciously he became the perfect artist for he had learnt the art of living, though the way of life he had adopted was very different from the world's way. It became apparent that the pursuit of truth and godness leads among other things to this artistry in life.

As he grew older his body seemed to be just a vehicle for the mighty spirit within him. Almost one forgot the body as one listened to him or looked at him, and so where he sat beecame a temple and where he trod was hallowed ground.

Even in his death there was a magnificence and complete artistry. It was from every point of view a fitting climax on the man and to the life he had lived. Indeed, it heightened the lesson of his life. He died in the fullness of his powers and, as he would do doubt have liked to did, at the moment of prayer. He died a martyr to the cause of unity to which he had always been devoted and for which he had worked unceasingly, more speciallay during the past year or more. He died suddenly as all men should wish to die. There was no fading away of the body or a long illness or the forgetfulness of the mind that comes with age. Why then should we grieve for him? Our memories of him will be of the Master, whose step was light to the end, whose smile was infectious and whose eyes were full of laughter. We shall associate no failing powers with him of body or mind. He lived and he died at the top of his strength and powers, leaving a picture in our minds and in the mind of the age that we live in that can never fade away.

That picture will not fade. But he did something much more than that, for he entered into the very stuff of our minds and spirits and changed them and moulded them. The Gandhi generation will pass away, but that stuff will remain and will affect each succeeding generation, for it has become a part of India's spirit. Just when we were growing poor in spirit in this country, Bapu came to enrich us and make us strong, and the strength he gave us was not for a moment or a day or a year but it was something added on to our national inheritance.

Bapu has done a giant's work for India and the world and even for our poor selves, and he has done it astonishingly well. And now it is our turn not to fail him or his memory but to carry on the work to the best of our ability and fulfil the pledges we have so often taken.

किताबों का घर

भगवती प्रसाद द्विवेदी

मौन सभी नारी-नर हैं
यहाँ किताबों का घर है।

तरतीबों से अलमारी
जैसे फूलों की क्यारी
अलमारी में हैं पुस्तक
दिखतीं नई-नई लक-दक
मुखरित इनमें नव-स्वर हैं
यहाँ किताबों का घर है।

बच्चे-बूढ़े, नर-नारी
जिन्हें किताबों से यारी
बुक-लॉकर खुलवाते हैं
पुस्तक पढ़ इतराते हैं
अद्‌भुत ज्ञान-सरोवर है
यहाँ किताबों का घर है।

फूलों का रस पी-पीकर
शहद बनाती हैं छककर
तितली फिरती मँडराती
मधुमक्खी मधु बरसाती
मधु-सा आखर सुखकर है
यहाँ किताबों का घर है।

किस्मत गढ़ने की धुन हो
पुस्तक पढ़ने की धुन हो
तो हर व्यक्ति महान बने
इक अच्छा इनसान बने
हुनर-उड़ानों के पर हैं
यहाँ किताबों का घर है।

204, टेलीफोन भवन, आर ब्लॉक
पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800001
(बिहार)

मूँगफली वाला घोंसला

लक्ष्मी खन्ना सुमन

चिड़िया ने उसी पेड़ पर उसी जगह नया घोंसला बनाया जहाँ पिछले साल बनाया था। कुछ समय बाद उसके अंडों से दो नन्हे-नन्हे बच्चे निकले। चिड़िया बहुत प्यार और लगन से उन्हें पालने लगी। पर तीसरे ही दिन एक कौवे ने ठीक उसके घोंसले के ऊपर अपना ऊबड़-खाबड़, मोटी टहनियों वाला घोंसला बनाना शुरू कर दिया।

ऊपर से कभी-कभी कोई छोटी टहनी या कुछ खाने का छोटा टुकड़ा या कुछ और चीज चिड़िया के घोंसले पर या उससे जरा ही दूर गिरती। चिड़िया डरती रहती कि अभी तो कौवे का घोंसला पूरा बना भी नहीं है, और ऐसी चीजें उसके घोंसले के पास गिर रही हैं। जब कौवे का परिवार वहाँ रहने लगेगा तो उनकी बीट आदि भी उसके बच्चों पर पड़ सकती है। कितनी बदबू आएगी!

उसने घबराकर कौवे से कहा, ''कौवे भैया, तुम अपना घोंसला किसी और जगह, जरा हटकर बना लो। तुम तो ठीक मेरे घोंसले के ऊपर अपना घोंसला बना रहे हो। ऊपर से छोटी-छोटी टहनियाँ या खाने के टुकड़े मेरे बच्चों के पास गिरते हैं। मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं मेरे बच्चों को चोट न लग जाए।''

कौवा बोला, ''मैं तो अपना घोंसला यहीं बनाऊँगा, मुझे यही जगह अच्छी लगी है। तुम्हें जरूरत हो तो तुम अपना घोंसला कहीं और ले जाओ।''

''मैं भला अपना घोंसला कैसे हटा सकती हूँ? उसमें तो मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। मैंने तो तुमसे पहले ही यहाँ अपना घोंसला बनाया है। तुमने तो अभी अपना घोंसला बनाना शुरू ही किया है। अभी तो तुम्हारे बच्चों के आने में कई दिन हैं। तुम कृपा करके अपना घोंसला कहीं और बना लो।''

"मैं कुछ नहीं जानता, मेरे बच्चों के लिए यही जगह ठीक है। मैं तो अपना घोंसला यहीं बनाऊँगा। तुम कौन होती हो मुझे कहने वाली कि मैं अपना घोंसला कहाँ बनाऊँ?"

चिड़िया कौवे की जिद भरी बात सुनकर उदास हो गई। वह क्या करे? कुछ सोचकर वह अपनी पुरानी सहेली गिलहरी के पास गई और बोली, "देखो बहन, तुम तो जानती ही हो कि मैंने पिछले साल भी अपना घोंसला वहीं पर बनाया था, पर कौवे ने इस बार ठीक मेरे घोंसले के ऊपर अपना घोंसला बनाना शुरू कर दिया है, जहाँ से अकसर कूड़ा-कचरा गिरता ही रहता है। इससे मेरे बच्चों के लिए खतरा है। मैंने कौवे की कितनी मिन्नत की कि वह कहीं और अपना घोंसला बनाए, पर कौवा तो अपनी ताकत के घमंड में, जिद पर अड़कर, वहीं घोंसला बना रहा है। तुम ही कोई उपाय करो कि कौवा वहाँ से अपना घोंसला हटाकर किसी और जगह ले जाए।"

गिलहरी बोली, "वैसे तो कौवा जब कहीं गया हो, तो हम दोनों उसका अधूरा बना घोंसला तोड़ सकते हैं, पर कौवा हमारे पर ही शक करेगा और बदले में मेरा और तुम्हारा दोनों का घर तोड़ देगा। तुम्हारे बच्चे तो कहीं के भी नहीं रहेंगे। हमें कुछ ऐसा उपाय सोचना चाहिए जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। यह कौवा इस जगह को छोड़कर कहीं और घोंसला बनाने के लिए मजबूर हो जाए।"

"अगर ऐसा हो जाए तो कितना अच्छा हो!"

"अच्छा, मैं कुछ करती हूँ।"

यह कहकर गिलहरी पार्क में चली गई। पार्क में एक बेंच पर एक छोटी लड़की अपना मूँगफली का पैकिट रखकर खेल रही थी। गिलहरी ने बेंच पर चढ़कर उस पैकिट की आधी से अधिक मूँगफलियाँ नीचे गिरा दीं। फिर एक-एक कर मूँगफलियाँ अपने कोटर में रखने लगी।

छोटी बच्ची को कुछ पता न चला। वह बाकी मूँगफली का पैकिट लेकर घर चली गई।

गिलहरी ने शाम होने तक सभी मूँगफलियों को अपने कोटर में इकट्ठा कर लिया।

दूसरे दिन जब कौवा कुछ खाने-पीने के लिए कहीं दूर गया हुआ था तो गिलहरी ने झटपट सभी मूँगफलियाँ बारी-बारी से कुछ तो कौवे के घोंसले के अंदर जगह-जगह फँसा दीं तथा कुछ मूँगफलियाँ घोंसले के ऊपर भी रख दीं।

फिर वह पास के पेड़ पर रहने वाले बंदर के पास गई जो अकसर इस पेड़ पर भी आता-जाता रहता था, और बोली, "बंदर भैया, क्या तुम्हें पता है कि हमारे पेड़ पर कौवे ने कितना सुंदर एक नए डिजायन का घोंसला बनाया है। उसने उसको कई मूँगफलियों से सजाया भी है। क्या तुमने ऐसा मूँगफली वाला घोंसला कभी देखा है?"

"मूँगफली वाला घोंसला? मैंने तो कभी नहीं देखा!"

बंदर के मुँह में मूँगफली का नाम सुनकर पानी आने लगा। कितने दिन हो गए, उसने मूँगफली नहीं खाई थी।

"अच्छा! जरा दिखाओ तो मुझे कौवे का वह घोंसला!"

"चलो-चलो, जल्दी!"

गिलहरी बंदर को जल्दी से अपने पेड़ पर ले आई और उसे कौवे का घोंसला दिखाकर बोली, "यह देखो, मूँगफलियों से सजाया कौवे का घोंसला।"

बंदर को तो जैसे कोई खजाना मिल गया था। वह झट से उछलकर कौवे के घोंसले पर पहुँच गया। उसने पहले तो घोंसले पर रखी मूँगफलियाँ खाईं। "वाह! मजा आ गया।"

फिर पूरे घोंसले को खोद-खोदकर अंदर अच्छी तरह छिपाई गईं मूँगफलियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर खाने लगा। इस क्रम में सारा घोंसला तहस-नहस हो रहा था।

तभी कौवा भी वापस पहुँच गया। अपने घोंसले को बंदर द्वारा इस तरह बरबाद करते देख उसकी समझ में कुछ नहीं आया, पर बंदर के आगे उसकी क्या चलती! बस, दूर-दूर से काँव-काँव करता रहा।

इधर, चिड़िया और गिलहरी अपनी तरकीब सफल होती देख मुँह छिपाकर हँसती रहीं।

अपने घोंसले की ऐसी बरबादी देख कौवा बंदर से डरकर कहीं और, दूसरे पेड़ पर नया घोंसला बनाने चला गया।

चिड़िया ने गिलहरी को धन्यवाद दिया।

गिलहरी बोली, "अरी, इसमें धन्यवाद की क्या बात है? पड़ोसी ही तो पड़ोसी के काम आता है।"

रेलगाड़ी

एस.के. सक्सैना

छुक... छुक... करती रेलगाड़ी
मुन्नी आओ चुन्नी आओ
अब्दुल तुम इंजन बन जाओ
रश्मि तुम टी.टी. बन जाओ
सब को बोलो टिकट दिखाओ
खाकी ड्रेस में गन को लेकर
''टाइगर'' पुलिस मैन बन जाओ
हर डिब्बे में जा-जा करके सबी चेकिंग कराओ

सफेद पैंट कोट और कैप लगाकर
''क्राइस्ट'' तुम गार्ड बन जाओ
झंडी हरी दिखा-दिखा कर सीटी
तेज बजा-बजा कर गाड़ी को
चलने का सिग्नल तुम दे दो
छुक... छुक... छुक... छुक...
छुक... छुक... छुक... छुक...
आगे बढ़ती रेलगाड़ी

नाले नदियाँ और पहाड़ सब को करती पर गाड़ी
बाएँ देखो, दाएँ देखो गाँव शहर कस्बों को देखो
हरे-भरे खेत खलिहान बड़े-बड़े कल-कारखाने
जैसे पीछे भाग रहे हैं
सबको पीछे छोड़ जाती गाड़ी
शहर-शहर पहुँचाती रेल सबसे यह करवाती मेल
सैर सपाटा कराती गाड़ी

छुक... छुक... छुक... छुक...
आगे बढ़ती रेलगाड़ी

देखो एक नया स्टेशन है आया
काला-कोट, काला-पैंट
लाल-लाल एक झंडी लेकर
प्लेटफार्म पर कौन खड़ा है?
स्टेशन मास्टर कहते हैं इनको
स्टेशन का ऑफिसर बड़ा है

धक-धक करके रूकती गाड़ी
कु-कु कर फिर चलती गाड़ी
छुक... छुक... छुक... छुक...
छुक... छुक... छुक... छुक...
आगे बढ़ती रेलगाड़ी

The Kanvarias

Aditi Sarkar

In the *Puranas* (ancient Hindu scriptures), the legend of Lord Shiva relates to numerous tales and adventures of demi gods and demons. The strife between the demons and demi gods is also very popular.

In one ancient legend–once, when the proud king of gods, Lord Indra, was on an elephant, came across a sage named Durvasa on the way. Lord Indra was offered a garland by the sage, given by Lord Shiva. The egoistic Indra placed it on the trunk of the elephant so as not to offend the sage. The elephant however knew of Indra's egoistic temperament. It intentionally threw the garland to the ground to enrage sage Durvasa. The holy sage was infuriated and cursed Indra and all demi gods *(devas)* depriving them of all strength, energy, and fortune for desecrating Lord Shiva's garland.

The *Asuras* (demons), led by King Bali took the opportunate moment to defeat the *Devas*. Bereft of power to control the heaven and the universe, the demi gods became helpless. In utter desperation they rushed to Lord Vishnu for help. On the advice of Lord Vishnu, the *Devas* by diplomatic alliance with the *Asuras* (demons), agreed to share the *amrit* (nectar of immortality) by churning the Milky Way (Ocean of Milk). Lord Vishnu however confided with the *Devas* that they would be the sole beneficiary to the *amrit*.

In the elaborate arrangement for the churning of the Mily Way, Mount Mandarachala (Mount Meru) was used as the churning pole with *Vasuki*, the King of Serpent, as the rope. The demons grasped the head, while the demi gods (Devas) held the tail.

In the churning process, lethal poison (*halahal*) poured out from the mouth of the serpent and Mount Meru began to sink in the Milky Way, endangering the universe. Lord Vishnu turned dark with the poison, but the incarnation of Karma (turtle) quickly supported the mountain from sinking.

Lord Vishnu then requested the demi gods to approach Lord Shiva to rescue the universe from the lethal poison (*halahal*). The compassionate Lord Shiva consumed the *halahal,* while Goddess Parvati held the poison in Lord Shiva's throat to prevent the *halahal* from destroying the universe.

Lord Shiva was thus named *Neelkantha* (Blue throat) and became a perpetual negative energy.

In the *Treta Yuga,* Lord Shiva's ardent devotee Ravana, the King of Srilanka, after deep meditation brought holy water of Ganga River using *'kanvar'* and sanctified Lord Shiva's temple in Pura Mahadev (a small village in Pilana Tehsil in Baghpat District of Uttar Pradesh), to release *Lord Shiva* from the negative energy of the *'halahal'* and purify the universe.

Ravana, the King of Srilanka was the first *Kanvar. 'Kanvanrati'* in Sanskrit means: a pilgrim carrying a bamboo pole on his shoulders with balancing pots. During religious pilgrimage, the devotees of Shiva carry dangling pots of holy water balanced on a *Kanvar.* This contraption is also called *'Kavad'*.

Since antiquity, saints have trekked to holy places to assert and correlate some myth or some legend described in ancient scriptures. The ancient pilgrimages have evolved through time as *Yatras,* specially during the *chaturmas,* before the onset of some season, ritual or festivity to celebrate

some ancient religious event. The *yatra* commences with fasting, celibacy and penance.

To celebrate the ancient tradition in the purification of Lord Shiva from the negative energy, pilgrimage to the Ganga river is undertaken by devotees; today, in the monsoon month of *Savan* (July-August), saffron clad devotees of Lord Shiva continue to assert the ancient faith by undertaking the annual pilgrimage to the banks of the Ganga river. They fetch holy water and trek back chanting Bol Bam (speak Shiva), to perform *abhisheka* (anointing) on the *Shivalingas* (phallic metamorphose of Shiva) and sanctify their local Shiva temple on the *Amavasya (New Moon)* day. It is the ancient celebration of the purification of Lord Shiva from all negative energy.

A-91, Ashok Vihar-II
Delhi-110052

दरजी और हाथी

प्रेम वर्षा सेठी

इक दरजी का हाथी था दोस्त
केला खिलाए उसे हर रोज
बीमार पड़ा दरजी इक शाम
बोला, बेटा, तू कर काम।

खिड़की पर बैठा था बेटा
और मगन था कपड़े सीता
हाथी आया था खिड़की पर
चुभोई सूई उसे सूँड़ पर।

हाथी को भी गुस्सा आया
कीचड़ फिर वो लेकर आया
डाला कीचड़ उस नटखट पर
बदला लिया हाथी ने उसी पल।

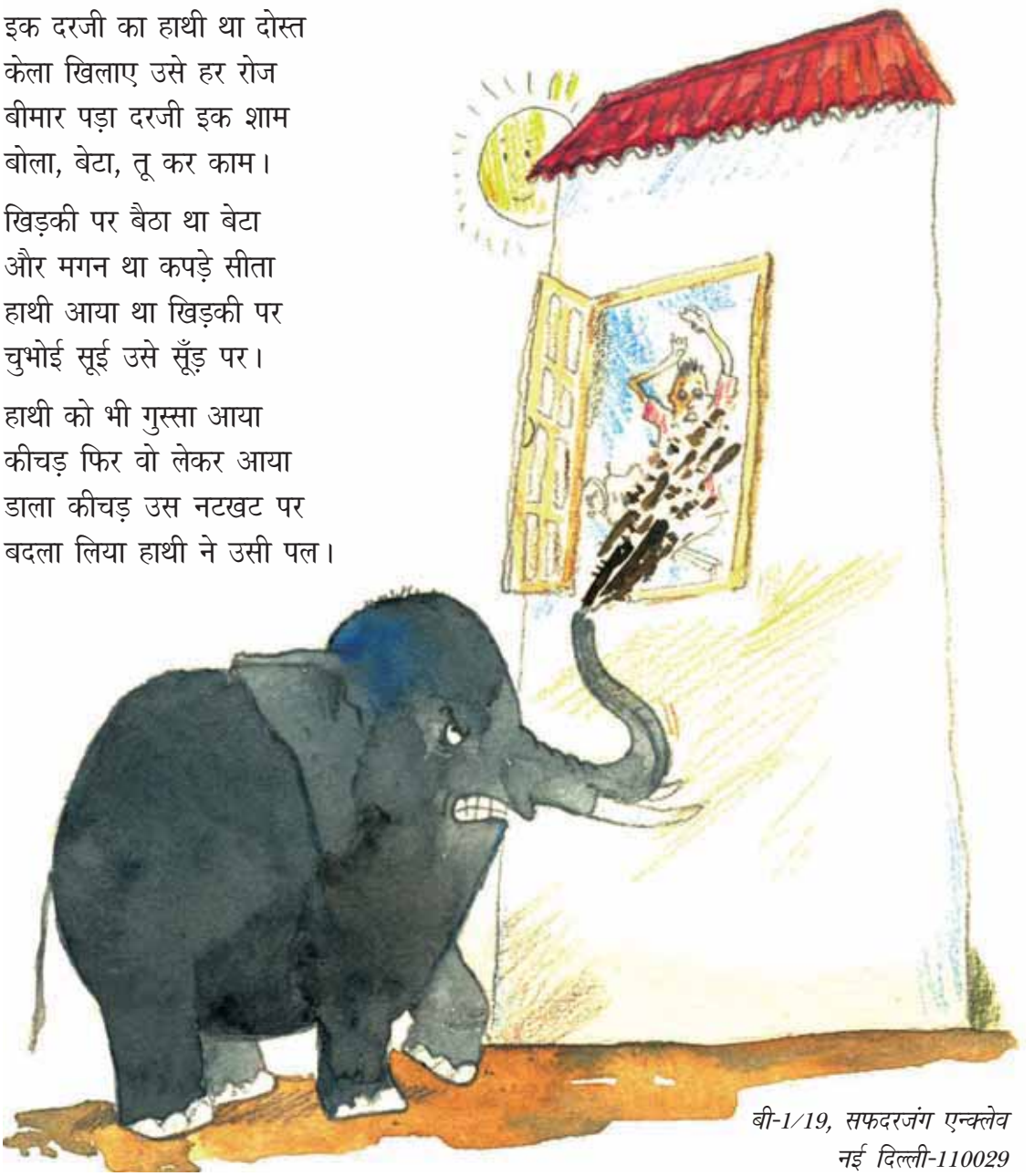

बी-1/19, सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029

गाँधी जी और पटेल की किस्सागोई

शोभा माथुर बिजेन्द्र

हिंदुस्तान में अँग्रेजों का राज्य था। ब्रिटिश सेना ने निर्दयता में नादिर शाह और जर्मनी के नाजियों को भी मात कर दिया था। अँग्रेजों की निर्दयता का हाल यह था कि गाँव की स्त्रियों को लिटाकर बूट पहनकर सिपाहियों से उन पर से गुजरने को कहा जाता था।

दिन-प्रतिदिन दमन के साथ असहायता की भावना बढ़ती जा रही थी। बड़े-बड़े लीडर विरोध कर रहे थे। अत्याचार की कोई सीमा नहीं थी। इसी विरोध के कारण गाँधी जी को कई बार जेल जाना पड़ा था।

एक बार गाँधी जी और सरदार पटेल दोनों को अँग्रेजों ने यरवदा जेल में बंद कर दिया। दोनों खामोश। पटेल जी का मूड ठीक करने के लिए गाँधी जी बोले, ''सरदार पटेल जी, सुनो, एक कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। कभी-कभी जिंदगी ऐसे मोड़ पर आ जाती है कि मरा हुआ साँप भी इनसान के बहुत काम आ जाता है।''

सरदार पटेल के चेहरे पर से परेशानी के भाव चले गए। अब वह हैरत में थे। कहने लगे, ''मरा हुआ साँप इनसान के काम आ सकता है? बापू, यह आप क्या कह रहे हैं? मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा है।''

बापू बोले, ''तो सुनो, एक गाँव में एक बहुत ही बुजुर्ग औरत रहा करती थी। कई बेटों के होते हुए भी वह रोटी के एक टुकड़े को तरसती थी। कभी-कभी कोई दया करके दे देता तो वह खा लेती थी, वरना भूखी ही सो जाती थी।

''यहाँ वह कहावत चरितार्थ थी कि एक माँ चार बेटों को पाल सकती है, मगर चार बेटे मिलकर एक माँ को नहीं पाल सकते। ऐसे में पड़ोसी ही उस बुढ़िया का सहारा थे। उसकी एक आवाज पर भागकर आते थे।

''एक शाम जैसे ही बुढ़िया अपनी झोंपड़ी में घुसी, भूसे के ढेर में काले नाग को फुँफकारते देख चीखने लगी। पड़ोसी आ गए। उन्होंने साँप को लाठियों और बल्लम से मार डाला। तब जाकर बुढ़िया की जान-में-जान आई।

''पड़ोसी चले गए, मगर जल्दी में मरा हुआ साँप वहीं छोड़ गए। सुबह जब बुढ़िया सोकर आँगन में आई तो देखा, मरा हुआ साँप बाहर पड़ा है। बुढ़िया ने उस साँप को डंडे से उठाकर छप्पर पर डाल दिया। बच्चे उस छप्पर से लटकते साँप को देखकर डरकर वहाँ न आते, न अमरूद के पेड़ पर पत्थर मारते। बुढ़िया सुख-चैन से रह रही थी। तभी एक दिन उसने थोड़े-से गेहूँ धोकर बाहर आँगन में सुखाए।

''गेहूँ सूखता देख परिंदे आ-आकर गेहूँ खाते तो बुढ़िया बाहर बैठकर उन्हें भगाती रहती। तभी उसने देखा, एक चील मुँह में एक चमकती हुई

चीज लेकर छप्पर पर आई। वह भूखी थी। उसने वह चमकती हुई चीज छप्पर पर छोड़ी और मरा हुआ साँप लेकर उड़ गई।''

''गरीब बुढ़िया ने जब डंडे से चमकती चीज उतारी तो वह हैरान रह गई। वह खुशी से नाचने लगी, क्योंकि वह तो हीरे का हार था। बेटों ने सुना तो सभी बहुएँ, पोते-पोती आ गए, 'दादी-दादी' कहते। सभी ने बुढ़िया को गले लगाया। मान दिया। अब वह करोड़पति कहलाने लगी। मान तो पैसे का होता है, इनसान का थोड़े ही होता है!

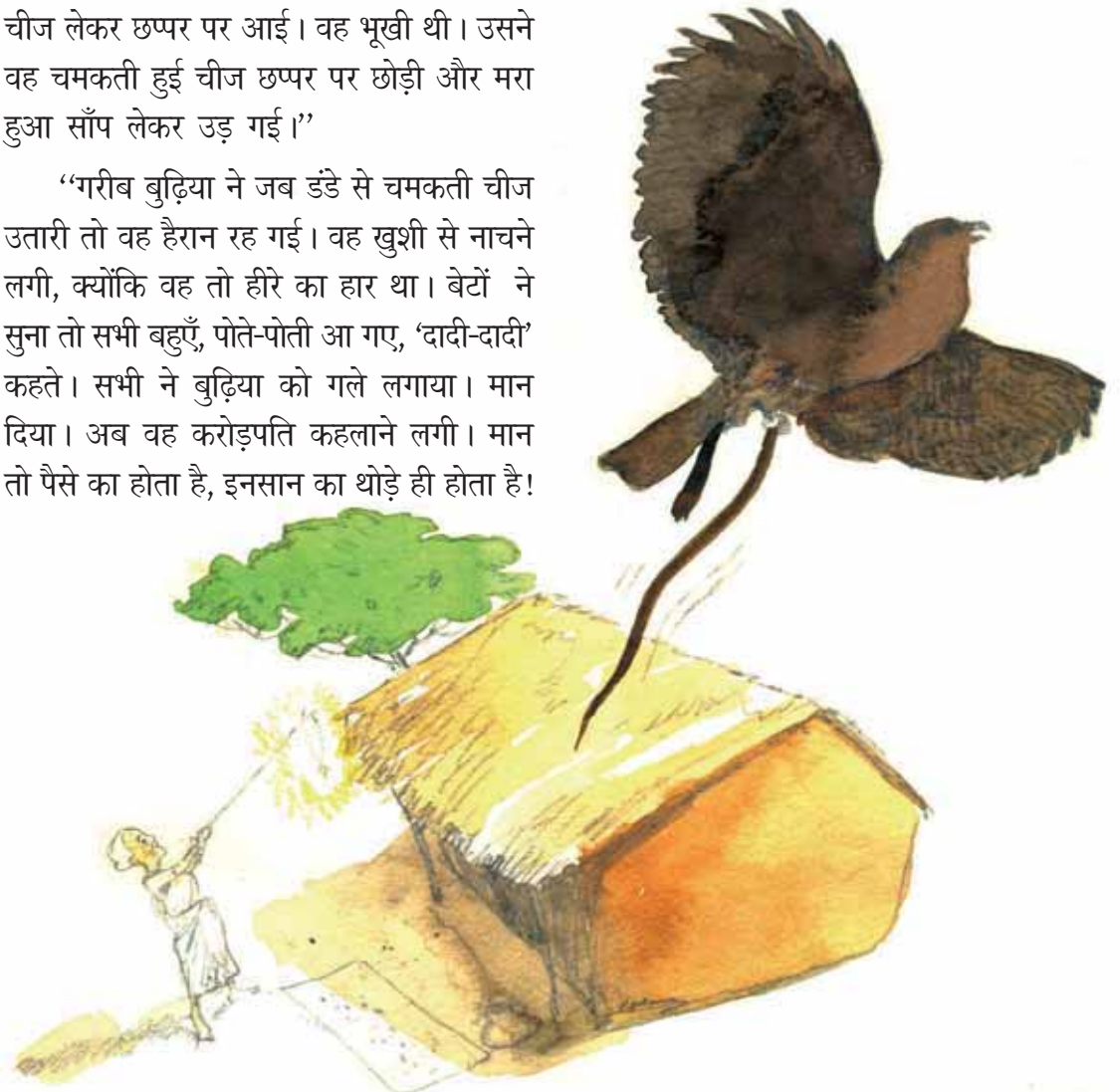

मरे साँप ने उसे परिवार का सुख भी दिलवाया। मैंने ठीक कहा था न?'' बापू बोले।

जब गाँधी जी ने अपनी कहानी समाप्त की तब सरदार पटेल बोले, ''मैं भी आपको एक कहानी सुनाऊँगा।''

इस प्रकार दोनों छोटी-छोटी कहानियों द्वारा जेल के दुखभरे दिन काटते रहे और हिंदुस्तान को आजाद कराने की रणनीति भी बनाते रहे। जेल में वल्लभभाई पटेल और गाँधी जी की किस्सागोई मशहूर है।

बी-8, 509, पर्यटन विहार
वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली-110096

Mango Grove and Jadumani

Gayatri Mishra

Jadumani was the unassailable poet in the royal court of Nayagarh kingdom of Odisha. Through jokes, humour satire and ridicule, he used to face the truth and unmasked dishonesty, illegitimacy and untruthfulness. No one could match with his wit, ingenuity and poem writing. He was able to win the heart of the king as well as the subjects with his talent.

One day on incitation of the courtiers, the king asked Jadumani to bring a pair of silk attire for him with the assurance to pay the full price after getting the apparel. Jadumani borrowed some money from the village moneylender to buy the silk attire. However, the money was only half the price of the clothes. Therefore, he paid half the price of the clothes and promised the shopkeeper to pay the rest of the amount within fifteen days. He gave the pair of silk apparel to the king. The king also liked the same and ordered the court accountant to make the payment of clothes to Jadumani immediately.

But the courtier was in a mood to put jadumani in trouble. Hence, instead of paying him the money, they took many pretexts. The king also was convinced with their pleas.

The King had one mango grove of only twenty three mango trees, at 'Itamati', the native village of Jadumani. With the instigation of the courtiers the king handed over the responsibility of the mango grove to Jadumani. But put forth a condition that the price of the silk clothes will be paid only after the mangoes of these groves will ripe and will be sold in the market.

Jadumani took the responsibility of the mango groves. He took care of the grove properly. In the mango season, the trees were laden with mangoes. Within some days, those got ripe also. Jadumani plucked the ripe mangoes and consumed them himself. He sent some mangoes to his relative's place and distributed some to his neighbours. The courtiers informed the king about this act of Jadumani. The king immediately called on Jadumani out of fury.

Jadumani thought that the mangoes are meant to be eaten. Therefore, if consumption and distribution of mangoes is a crime then he will accept whatever punishment the king would give him. However, he framed a poem in his mind and reached the court. When the king questioned him about the fact, he recited the poem before him.

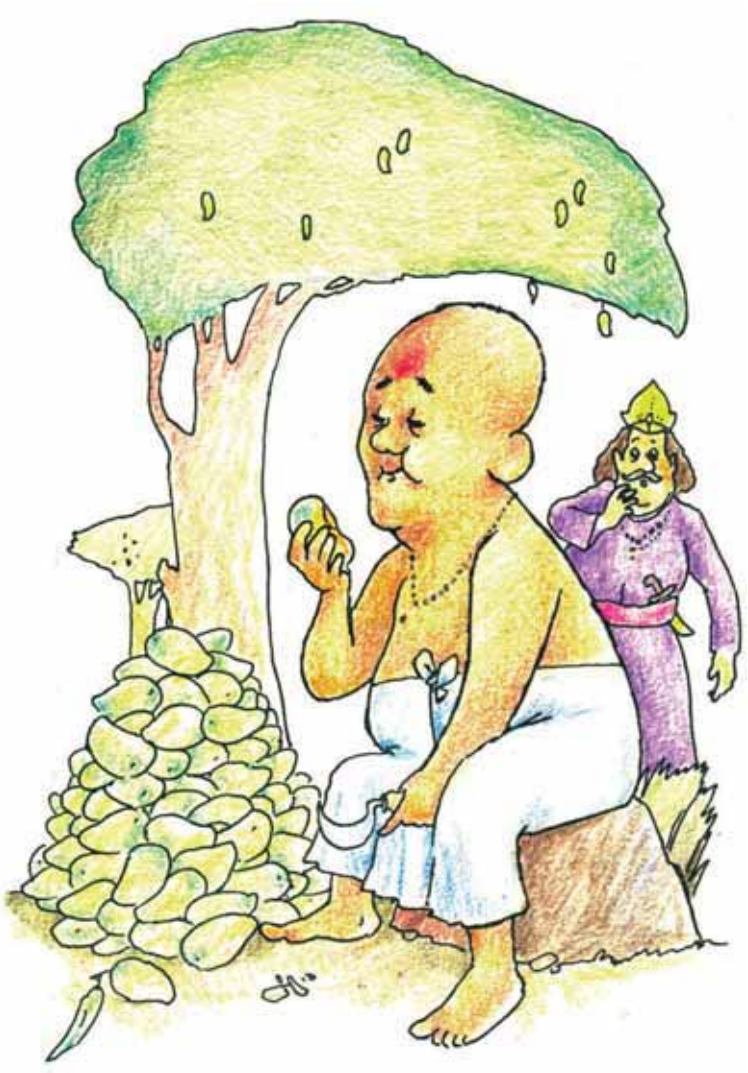

Upon me, mercy that no one has
Cannot express the fasting that is so harsh
On selling attire, got grove rights
Unable to say the distress of days and nights
In my torn fate
Only disappointments that destiny wrote

(That means no one has mercy for Jadumani. He was spending time without food. He thought that his plights would wane after getting the mango grove in exchange of silk attires. His sorrows are fathomless due to a tattered fate. The destiny has written only distress for him).

Listening to the poem, the king was delighted as well as became aware of the conspiracy of the courtiers. He right away made the payment and punished the conspiring courtiers. Realizing his fault he immediately arranged for the transfer of possession of the mango grove legally in the name of Jadumani. There was no restriction on the use of mangoes. He could eat, sell of distribute the mangoes as per his wish. No one would object.

A/82, Nilakantha Nagar
Nayapalli, Bhubaneswar-751012
(Odisha)

घर-घर आई दीवाली

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

रंग-बिरंगी खुशियाँ लेकर
घर-घर आई दीवाली
खील-बताशे और खिलौने
भर-भर लाई दीवाली।

कहीं पटाखे, कहीं फुलझड़ी
छूट रहे हैं कहीं अनार
बजा रही है धूम-धड़ाकों की
शहनाई दीवाली।

द्वार-द्वार पर दीप सजे हैं
और मुँडेरों पर झालर
आज अँधेरों की जमकर
कर रही पिटाई दीवाली।

मक्खी-मच्छर, मकड़ी-झींगुर
सबका देश-निकाल हुआ
घर-आँगन की ऐसी कुछ
कर गई सफाई दीवाली।

आओ मिलकर, बैर भूलकर
सभी मनाएँ यह त्योहार
जाति-पाँति और ऊँच-नीच की
भरती खाई दीवाली।

युक्का-206, पैरामाउंट सिंफनी
क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद-201016 (उ.प्र.)

दोस्ती में शक नहीं

राजकुमार जैन 'राजन'

चंपक वन में रहने वाले चीकू खरगोश एवं गुलगुल गिलहरी में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक ही बरगद तले रहते थे। पेड़ के नीचे की माँद में चीकू का अपना घर था और तने के एक कोटर में गुलगुल रहती थी।

चीकू और गुलगुल हमेशा साथ-साथ रहते। हमेशा एक-दूसरे की मदद करते। इस तरह दोनों की दोस्ती पूरे जंगल में प्रसिद्ध हो गई थी।

इस बार गुलगुल गिलहरी को कुछ समय के लिए बाहर जाना था।

"भैया चीकू, मेरे घर का ध्यान रखना। तुम तो जानते ही हो कि बारिश अब करीब ही है और मैंने बारिश के लिए अभी से खाने-पीने का सामान जोड़ रखा है।" वह चीकू से बोली।

"चिंता न करो गुलगुल, मैं तुम्हारे घर की पूरी देखभाल करता रहूँगा।" चीकू ने आश्वासन दिया तो गुलगुल निश्चिंत होकर अपने बच्चों के साथ घूमने निकल गई।

कुछ समय बाद गुलगुल जब घूम-घामकर लौटी तो अपने कोटर में घुसते ही उसका माथा ठनका... 'यह क्या, इतनी मेहनत से जमा किये हुए मक्की के दाने, मूँगफली, अखरोट... सब नदारद थे! यह सब कैसे हो गया...? अब बारिश में वह क्या करेगी...? बच्चे क्या खाएँगे...?' गुलगुल एकदम रुआँसी हो गई।

वह नीचे चीकू की माँद में पहुँची। चीकू कहीं गया हुआ था। चीकू की माँद में कुछ अधखाए मक्की के दाने, अखरोट, मूँगफली आदि बिखरे पड़े थे।

'तो क्या चीकू चोर है? चीकू ने मेरा खाना चुरा लिया है?' गुस्से के मारे बुलबुल भुनभुनाती हुई लौटने लगी। तभी चीकू उसे आता हुआ दिखाई दिया।

"अरे गुलगुल, कब लौटी? सब ठीक-ठाक तो है न?" चीकू ने पास आते हुए पूछा।

"हाँ, ठीक ही होगा। पर भैया, तुम्हें खाना ही चाहिए था तो मुझसे माँग लेते। मेरी अनुपस्थिति में मेरा अनाज-दाना चुराकर तुम्हें क्या मिल गया? मुझे तो तुम पर कितना विश्वास था, अपना घर तुम्हारे भरोसे छोड़ गई थी। तुमने तो दोस्ती को भी कलंकित किया है।" गुलगुल की आँखों में आँसू आ गए।

"यह क्या कह रही हो तुम? मैंने तुम्हारा खाना चुराया है?" चीकू को अब तक विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी दोस्त गुलगुल ही उस पर चोरी का इल्जाम लगा रही है। "देखो गुलगुल, मुझे नहीं पता कि तुम मुझ पर इतना घटिया इल्जाम भी लगा सकती हो। ठीक है, मैं अगर चोर हूँ तो कभी मुझसे बात मत करना, समझी!" चीकू अपना गुस्सा दबा नहीं पाया।

"अरे, तो मुझे कौन-सी गरज पड़ी है तुम जैसे चोर से बात करने की! मैंने अपनी आँखों से देखा है, तभी तो कह रही हूँ।" गुलगुल भी भुनभुनाती हुई अपने बिल में घुस गई।

दो दिन यों ही बीत गए। गुलगुल ने फिर से खाने-पीने का सामान जोड़ना शुरू कर दिया। चीकू भी अकेला सुबह से ही भोजन की तलाश में निकल जाता था। अब दोनों को एक-दूसरे की शक्ल देखना तक पसंद नहीं रहा।

'इतना बड़ा चोरी का इल्जाम इस गुलगुल ने मुझ पर लगा दिया!' चीकू सोचता रहता।

उस दिन चीकू जब मीठी रसदार गाजरें लेकर लौट रहा था तो रास्ते में ही घने बादल घिर आए। एकदम अँधेरा-सा हो गया। 'लगता है जोर की बारिश होगी। यहाँ तो कहीं छिपने की जगह भी नहीं है। तेजी से घर लौटना चाहिए।' चीकू सोच ही रहा था कि दूर कोने में गुलगुल आती दिखाई दी। शायद भोजन की तलाश में निकली थी और अब तेजी से घर की ओर लौटना चाह रही थी।

''टप...टप...टप...'' तभी जोर से पानी बरसना शुरू हो गया। चीकू ने छलाँग लगाई। देखा, पानी में भीगी गुलगुल काँप रही है। चीकू से रहा नहीं गया, ''गुलगुल, तुम चाहो तो मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। यहाँ तो भीग जाओगी। बीमार भी हो सकती हो।''

और कोई रास्ता नहीं था। चीकू तीन-चार छलाँग में ही घर पहुँच गया। गुलगुल के बच्चे उसके इंतजार में थे। चीकू ने उन्हें गाजर खाने को दी। गुलगुल सोच रही थी कि आज उसे चीकू बारिश से नहीं बचाता तो उसका क्या हाल होता। बारिश जब थम गई तो वह नीचे चीकू को धन्यवाद देने गई।

''चलो, अच्छा है, तुमने तो मुझे चोर ही समझ लिया था।'' चीकू अब तक पिछली बातों को भूल नहीं पाया था।

''तुम्हारे घर में ही अधखाए मक्की के दाने, अखरोट व मूँगफली के दाने बिखरे पड़े थे।'' गुलगुल ने कहा।

चीकू चौंका। ''कहाँ?'' उसने तलाश शुरू की। अंदर देखा, एक बड़ा-सा बिल बना हुआ था। उसमें से एक मोटा चूहा उछलकर भागा। गुलगुल की आँखें फटी-की-फटी रह गईं। चीकू और गुलगुल दोनों ही समझ गए थे कि इस चूहे ने सारा खाना चुराया था।

''भैया, मुझे माफ कर दो... मैं बहुत शर्मिंदा हूँ।'' अब गुलगुल सोच रही थी कि बिना जाने-समझे वह अपने दोस्त चीकू पर शक कर बैठी थी।

और चीकू...? वह तो हँसते हुए उसे माफ कर ही चुका था।

आकोला-312205, चित्तौड़गढ़
(राजस्थान)

खिलौनेवाला

उमेश कुमार चौरसिया

डम-डम-डम-डमरू बजाता
गली-गली में गीत सुनाता
सब बच्चों का मन हर्षाता
आया खिलौनेवाला।

भालू भी है बंदर भी
शेर भी है गिलहरी भी
चाबी घुमा सबको नचाता
आया खिलौनेवाला।

दूल्हा भी दुल्हन भी लाया
संग-संग बैंड-बराती लाया
तरह-तरह के खेल दिखाता
आया खिलौनेवाला।

छोटे-बड़े अमीर-गरीब
दौड़े आए सब करीब
भेद मिटाकर प्रेम बाँटता
आया खिलौनेवाला।

50, महादेव कॉलोनी, नागफणी
बोराज रोड, अजमेर-305001
(राजस्थान)

चौथा पक्षी

रेनू चौहान

कालू कौए से बात करने से सब कतराते हैं। जब देखो वो दूसरों की बुराई ही करता रहता है। एक दिन गौरैया के पास बैठा तो आँख इधर-उधर नचाते हुए बोलने लगा, ''गौरैया बहन, यह कुहू कोयल भी न जाने अपने को क्या समझती है? ठीक है कि वो ठीक-ठाक, गाना-वाना गा लेती है, पर इसका मतलब यह तो नहीं कि दूसरों से सीधे मुँह बात ही न करे। हर समय अपनी धुन में कुहू-कुहू करती रहती है।''

हँसती हुई गौरैया बोली, ''तो करने दो उसे कुहू-कुहू! हमें क्या परेशानी है? हम भी तो सारा दिन अपना गाना गाते हैं और तुम भी तो सारा दिन काँव-काँव करते हो।''

''हाँ ठीक है, ठीक है,'' कहकर कालू वहाँ से उड़कर मोर के पास जा पहुँचा। पीकू मोर से बोला, ''तुम तो जानते हो कि तुम्हारे पंख कितने सुंदर हैं और तुम नाचते भी कितना सुंदर हो। पर यह गौरैया बड़ी ही मुँह फट है। उस दिन कह रही थी कोयल के पंख मोर से ज्यादा सुंदर हैं और फिर नाच तो मैं भी बहुत अच्छी लेती हूँ। क्यों भाई पीकू, तुम्हारा क्या कहना है?''

पीकू बिना नाराज हुए हँसते हुए बोला, ''ठीक ही कहती है गौरैया। कोयल के पंख भी सुंदर ही हैं और फिर इन बेकार बातों में रखा ही क्या है? क्यों हम इन बातों में अपना समय बरबाद करें। कुछ दाना-वाना बीन लें। कुछ नृत्य हो जाए तो जिंदगी का मजा आ जाए।''

बेचारा कालू अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से उड़ा तो सीधा गुटरगूँ के पास जा पहुँचा। गुटरगूँ प्यारी-प्यारी आवाजें निकालता हुआ तिनके बीन रहा था। साथ-साथ अपनी पत्नी के साथ गप्प भी उड़ा रहा था। दोनों बड़े खुश नजर आ रहे थे। कालू के वहाँ उतरते ही गुटरगूँ बोला, ''आओ कालू, आओ, कैसे हो?''

कालू बोला, ''मैं तो मजे में हूँ। बस तुम्हें पीकू, मोर की बात बताने आया था। वो क्या है कि...''

इससे पहले कि कालू अपनी बात पूरी करता, गुटरगूँ बोला, ''भई कोई अच्छी बात, कोई किस्सा-कहानी हो तो सुनाओ। बड़ा मजा आएगा। पर यह दूसरों की बुराईयाँ और चुगली करना बंद कर दो। यह आदत अच्छी नहीं है।''

यह सुनकर कालू कौआ बिना अपनी बात पूरी किए, अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से चल दिया। नदी किनारे खड़े, बड़े-से पेड़ पर जाकर सुस्ताने लगा। आज उसका दिन अच्छा नहीं गुजर रहा था। फिर वहीं बैठे-बैठे वह ऊँघने लगा। अचानक उसकी आँख खुली तो नीचे बैठे एक काले-से पक्षी को देखकर एकदम चिल्लाया और वहाँ से सरपट भागा।

सीधा उड़कर पीकू के पास पहुँचा। उसे ऐसे हाँफते और घबराए हुए देखकर पीकू ने पूछा,"क्या हुआ कालू? क्यों भागते हुए चले आ रहे हो? क्या कोई भूत वगैरह देख लिया है क्या?"

कालू को ऐसे घबराया देख कुहू कोयल और गुटरगूँ भी वहीं चले आए और पूछने लगे कि माजरा क्या है?

हाँफते हुए कालू बोला, "अरे, हमारे चंपक वन में एक बहुत भद्दा-सा, डरावना काला पक्षी आया है।"

उसकी इस बात पर सब हँसने लगे। हँसते हुए पीकू बोला, "क्या तुम से भी ज्यादा?"

इस पर कालू गुस्से से मुँह फुलाकर बोला, "जाओ, मैं तुमसे बात नहीं करता। मैं तुम्हें इतनी सीरियस बात बता रहा हूँ और तुम मेरा ही मजाक बना रहे हो!"

कुहू उसे मनाते हुए बोली, "नाराज मत होओ कालू भैया। पीकू तो यूँ ही मजाक कर रहा है। बताओ तो तुमने कहाँ देखा वो पक्षी?"

"हाँ-हाँ, बताओ, हम भी देखते हैं। कौन है, कहाँ से आया है?" गुटरगूँ बोला।

कालू बोला, "चलो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ, जहाँ मैंने वो पक्षी देखा था।"

आगे-आगे कालू चला, पीछे-पीछे अन्य पक्षी। नदी किनारे के पेड़ के पास जाकर कालू रुक गया। उसने चारों ओर देखा। उसे कहीं भी वो पक्षी नजर नहीं आया। अन्य पक्षी हँसने लगे।

हँसते हुए गुटरगूँ बोला, "तुमने क्या सोचा था वो यहीं बैठा तुम्हारे आने का इंतजार कर रहा होगा?"

पीकू ने कालू की नकल उतारते हुआ कहा, "बताओ भाई, कहाँ देखा तुमने वो भद्दा-सा काला पक्षी?"

कुछ सोचते हुए कालू बोला, "यहीं... यहीं तो बैठा था वो, नीचे। शायद कहीं चला न गया हो! कहीं इस नदी के पानी में डूब न गया हो?"

इस पर सब पक्षी फिर से हँसने लगे। गुस्से के मारे कालू मुँह फुलाकर पेड़ पर जा बैठा। संयोग से वह पेड़ की उसी डाली पर जा बैठा जिस पर वो पहले बैठा था। अचानक उसकी नजर नीचे पडी। उसे एक बार फिर वो भद्दा पक्षी नजर आया जिसे वो दिखाने के लिए सबको लाया था। वो एकदम चिल्लाकर बोला, "मिल गया, मिल गया, वो पक्षी मिल गया! यहाँ आओ, मेरे पास।"

गौरैया और गुटरगूँ झट से उसे पास आकर बैठ गए।

कालू बोला, ''वो देखो, नीचे वो पक्षी बैठा है।'' सबने देखा तो नीचे नदी में एक नहीं तीन पक्षी नजर आ रहे थे।

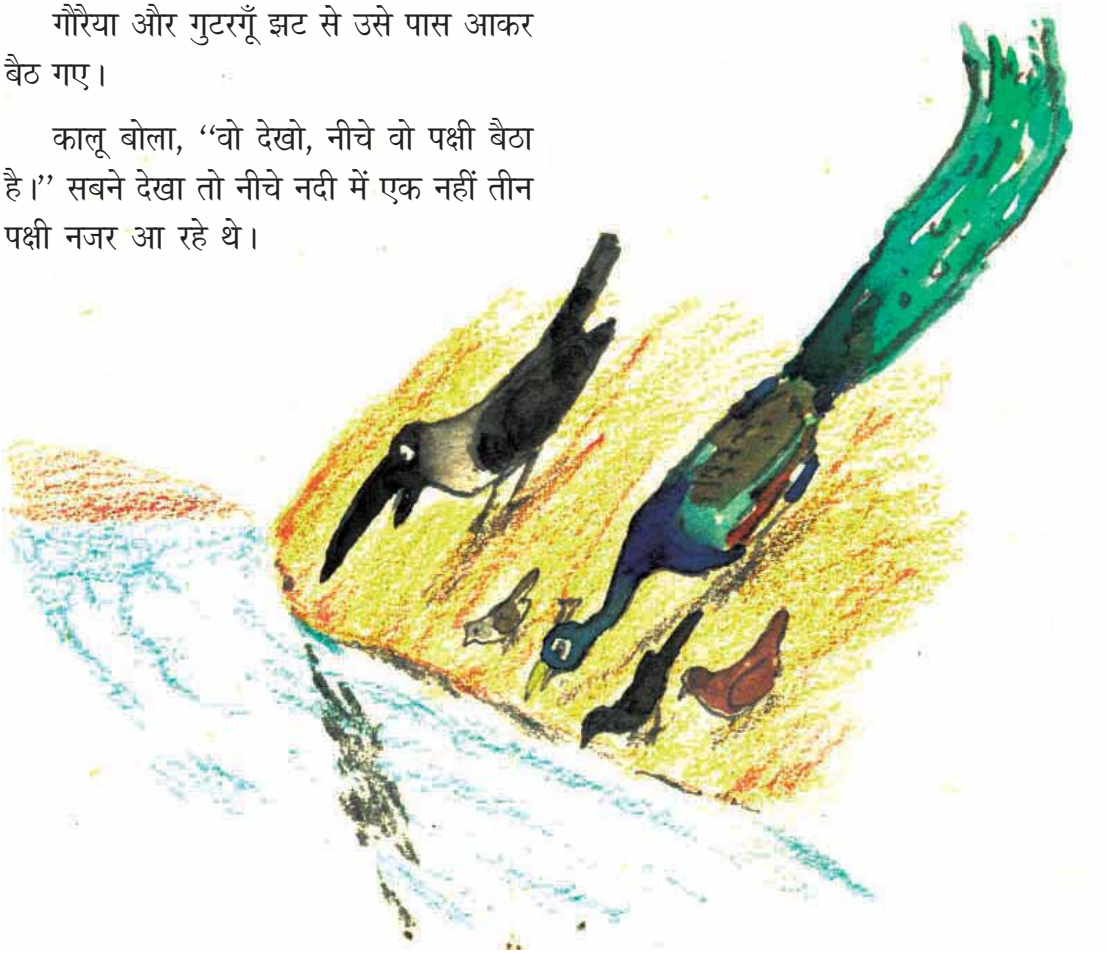

गौरैया चहकते हुए बोली, ''अरे! यह तो मैं हूँ। नदी के पानी में मेरी परछाईं नजर आ रही है।''

गुटरगूँ बोला, ''और वो मैं हूँ'' अपनी परछाई की ओर इशारा करते हुए उसने कहा।

इतने में धीरे-धीरे उछलता कूदता पीकू भी आ पहुँचा। पानी में अपनी परछाई देखकर बोला, ''यह मैं हूँ, रंग-बिरंगे पंखों वाला।'' गर्व से गरदन ऊँची कर पीकू बोला।

कुछ न समझते हुए मुँह बाये बैठा कालू बोला, ''तो फिर वो चौथा पक्षी कौन है?''

गुटरगूँ हँसता हुआ बोला, ''अब वो भद्दा है या सुंदर, यह तो तुम्ही जानो। पर वो तो...''

यह कहरकर गुटरगूँ और गौरैया फुर्र से वहाँ से उड़ गए। पीकू नाचने की तैयारी करने लगा। कालू ताकता रह गया।

बी-बी/6बी, जनकपुरी
नई दिल्ली-110058

Music

Akanksha Patel

Music is the passion of nature
She sings while she nurtures
Her sons and daughters

Music of bird chiriping
And of the cracking nuts
Pours happiness on those
Who are tied with special knot

Music of running water
Dances and reaches the ears
Of birds,animals and fruits like pears

Music of the dancing leaves
And that of the blowing wind spreads peace
Among the birds and the beasts

Music is all about the passion of nature
She sings while she nurtures
Her sons and daughters.

DAV Public School
Bhubaneswar-751008
(Odisha)

हिमालयन मोनल

सतीश कुमार अल्लीपुरी

मोर की तरह सिर पर सुंदर कलगी और रंग-बिरंगे पंखों वाला पक्षी हिमालयन मोनल को 'हिमालय का मोर' भी कहा जाता है। इस पक्षी को विश्व के सुंदर एवं अद्‌भुत पक्षियों में शुमार किया जाता है। हिमालयन मोनल का वैज्ञानिक नाम 'लोफोफोरस इंपीजेनस' है। स्थानीय भाषा में इसे 'मनाल', 'मान्याल' एवं 'डैंफे' भी कहा जाता है। नर एवं मादा मोनल के पंखों का रंग अलग-अलग होता है। नर मोनल हरे, नीले, पीले एवं काले रंग के मिश्रण वाले पंखों वाला होता है। इसके सिर पर मोर की तरह सुंदर कलगी होती है। इसके गरदन के पंख सुनहरे होते हैं। पूँछ का रंग भूरा होता है। पीछे के पंख चटख नीले एवं मेटैलिक रंग के होते हैं। मादा मोनल भूरे रंग की होती है। यह नर मोनल के मुकाबले कम सुंदर होती है। मादा के गले के नीचे एक सफेद पैच होती है। मादा मोनल की पूँछ पर सफेद धारियाँ होती हैं। मादा की आवाज नर मोनल की अपेक्षा अधिक तेज होती है।

मोनल लगभग 70 सेंटीमीटर तक लंबा होता है। नर मोनल का वजन लगभग ढाई किलो एवं मादा मोनल का वजन लगभग दो किलो तक होता है। एक वर्ष तक के मोनल में नर एवं मादा बच्चों में कोई अंतर दिखाई नहीं देता है। लेकिन जैसे-जैसे ये बड़े होते हैं, नर मोनल की लंबाई मादा के मुकाबले अधिक तेजी से बढ़ती है। हिमालयन मोनल भारत, पाकिस्तान, नेपाल एवं पूर्वी अफगानिस्तान में पाया जाता है। इसके अलावा यह भूटान, म्यांमार एवं दक्षिणी तिब्बत में भी पाया जाता है। भारत में यह उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, जम्मू-कश्मीर एवं

अरुणाचल प्रदेश में पाया जाता है। उत्तराखंड के गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान (उत्तरकाशी), नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान (चमोली) एवं केदारनाथ वन्य जीव विहार (रुद्रप्रयाग-चमोली) में यह पाया जाता है। हिमालयन मोनल उत्तराखंड का राजकीय पक्षी एवं नेपाल का राष्ट्रीय पक्षी है।

मोनल अपना घोंसला नहीं बनाता है। यह हिमालय के ऊँचे स्थानों पर रहता है। घने जंगलों, घास के बीच एवं ओक के वनों में यह निवास करता है। यह हिमालय के ढलानों एवं बर्फ की ऊँची चोटियों पर 4500 मीटर तक की ऊँचाई पर पाया जाता है। इसमें अधिक ठंड बरदाश्त करने की क्षमता है।

मादा मोनल किसी चट्टान व पेड़ के छेद में या उसकी खोह में अंडे देती है। मादा लगभग

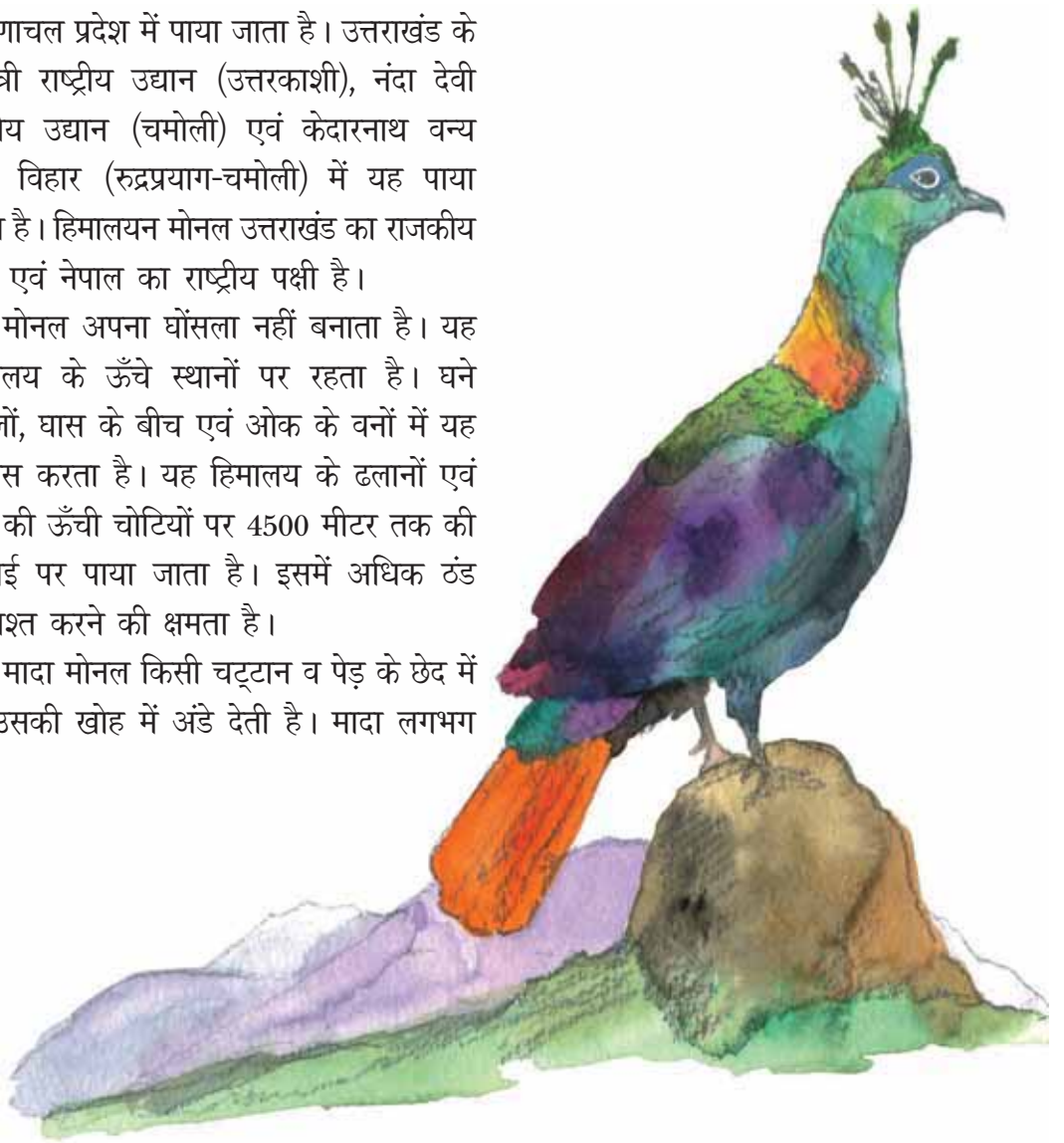

चार सप्ताह तक अपने अंडों की देखभाल करती है। इसके बाद वह अंडों को सेती है। अंडों के सेने तक नर-मादा साथ-साथ रहते हैं। मादा अप्रैल-अगस्त के बीच अंडे देती है। आमतौर पर मोनल पैरों से चलता है, लेकिन खतरे की स्थिति में यह उड़ता भी है। मोनल छोटे-छोटे कीड़े, फूल, तने एवं बीज खाता है। यह कंद-मूल-फल भी खाता है।

रंग-बिरंगे मोनल पक्षी की प्रजाति अब खतरे में है।

द्वारा-सीमा शर्मा, 116/7, जागृति विहार,
मेरठ-250001 (उ.प्र.)

Rain

Vidyarenu Swamy

I love the rain
Pouring down after thunder
Dripping down my window pane
Oh, What a wonder!
That it goes in and under
Dancing its way through every nook
As it finds a way to the brook

Little children wearing raincoats
Playing with little paper boats
As the paper boats sail
Leaving behind a trail

In the puddle
While the children get close
together in a huddle
Laughing with joy
As they play with their paper toy

Until the rain stops
The children go in the puddle with hops
Oh, what a nice rainy day
May be tomorrow
they can go to the bay.

Delhi Public School
Vasant Vihar, New Delhi-110070

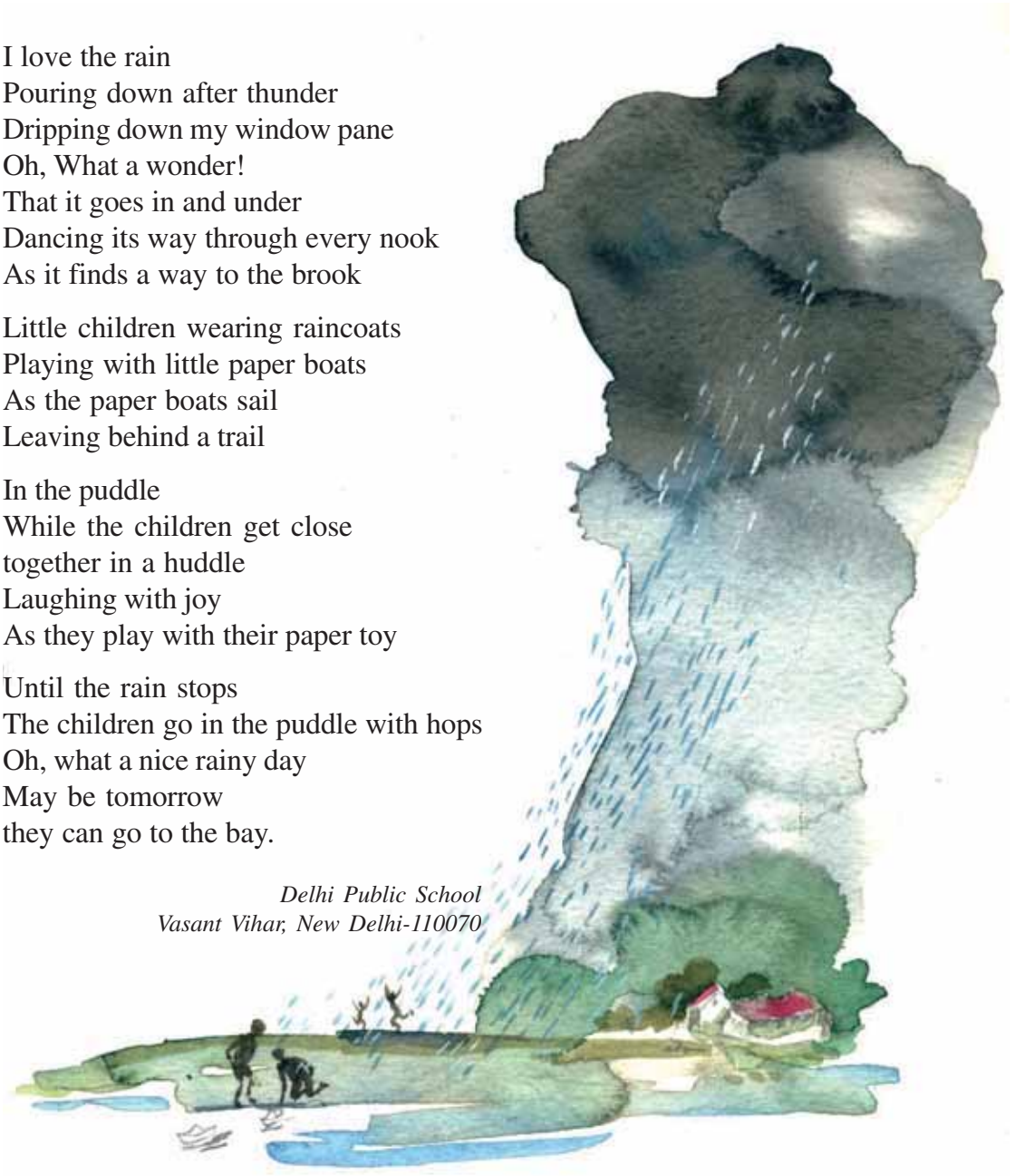

आप कितने बुद्धिमान हैं?

कृष्ण परवेज

1. वह कौन-सी चीज है जो खर्च करने पर बढ़ती है?
2. वह कौन-सी चीज है जो हम जैसी तो बन जाती है, पर हमारी तरह बोल नहीं सकती?
3. वह कौन-सी चीज है जिसे हम सब खा लेते हैं, पर हाथ नहीं लगाते?
4. वह कौन-सी चीज है जिसके पाँव नहीं हैं, फिर भी चलती है?
5. वह कौन-सी चीज है जो कुछ पलों में ही मीलों दूर बैठे हुओं से मेल करवा देती है?
6. वह कौन-सी चीज है जिसे जहाँ रखोगे वैसी ही बन जाएगी?
7. वह कौन-सी चीजें हैं जो सुबह-शाम आते हैं, पर आपस में नहीं मिलते?
8. वो कौन-सा अंक है जिसे किसी भी अंक से गुणा करो तो गुणनफल का जोड़ वही अंक होता है?
9. वह कौन-सा शब्द है जो उल्टा-सीधा एक समान है?
10. वह कौन-सी चीज है जो दिन में दिखाई नहीं देती, परंतु रात के अँधेरे में सब देख लेते हैं?

खरार
जिला-मोहाली (पंजाब)

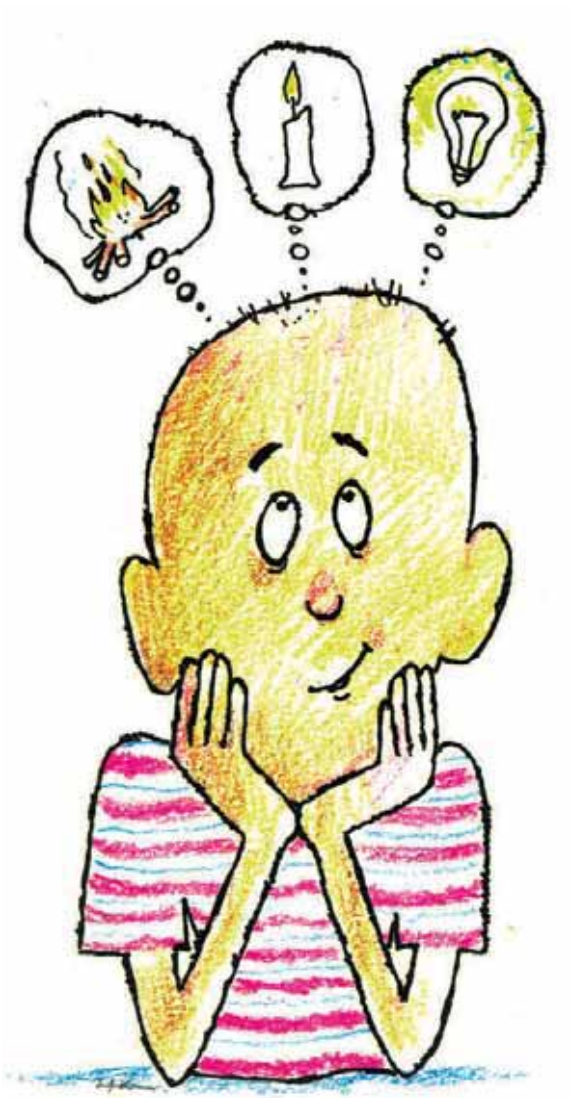

उत्तर :
1. ज्ञान 2. आईना 3. कसम (सौगंध) 4. सड़क 5. टेलीफोन 6. पानी 7. चाँद-सूरज 8. 9 (नौ) 9. जहाज 10. चाँद

A Trip to the Mountains

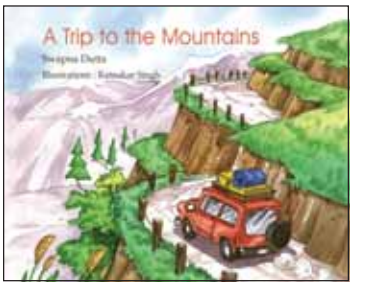

During summer vacations, Jaya along with her parents and brother visits Himalayas. She enjoys her holidays in the mountains and appreciate the beauty of nature, the high peaks, lakes, trees birds and animals.

Swapna Dutta has written fifty books for children and has won several awards for her books.

Ratnakar Singh is an artist and has graduated from the Lucknow College of Arts.

A Trip to the Mountains
Swapna Dutta
Illustrated by *Ratnakar Singh*
National Book Trust, India
₹ 35.00 14pp

Kavya Makes up Her Mind
Ramesh Bijlani
Illustrated by *Mohit Suneja*
National Book Trust, India
₹ 55.00 32pp

Kavya Makes up Her Mind

An interesting story about a girl, Kavya who loves her grandfather. She likes to spend her time with him and keeps on asking him many questions. One day she picks up her friend's hairclip in the school. She realizes her mistake and returns it to her friend.

Ramesh Bijlani is a versatile writer, with 15 books to his credit. He has written for medical professionals, lay adults, as well as for children.

Mohit Suneja has illustrated a number of books for children.

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date: 20/21 Same Month
Date of Publication: 14/10/2014

ENSURE YOUR PARTICIPATION IN THE LARGEST INTERNATIONAL BOOK FAIR OF THE AFRO-ASIAN REGION

NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

14 - 22 February 2015
Pragati Maidan

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Organiser

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Ministry of Human Resource Development
Government of India
Nehru Bhawan, 5 Institutional Area
Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110 070 (India)
Phone: 91-11-26707700 • Fax: 91-11-26707846
Website: www.nbtindia.gov.in

Co-organiser

इण्डिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन
INDIA TRADE PROMOTION ORGANISATION
Pragati Bhawan, Pragati Maidan, New Delhi-110 001
Website: www.indiatradefair.com

facebook.com/nationalbooktrustindia
facebook.com/newdelhiworldbookfair

- Guest of Honour Presentation
- CEOSpeak... a forum for publishing
- New Delhi Rights Table
- Authors' Corner
- Theme Pavilion & Children's Pavilion
- Cultural Programmes

Online booking for stalls / stands at
www.newdelhiworldbookfair.gov.in